

# परमेश्वर का नियम

Parmeshwar Ka Niyam

आज के ईसाई के लिए परमेश्वर का नियम

[parmeshwarkaniyam.org](http://parmeshwarkaniyam.org)

## परिशिष्ट 8h: मंदिर से संबंधित आंशिक और प्रतीकात्मक आजाकारिता

यह पृष्ठ उस श्रूतिला का हिस्सा है जो परमेश्वर की उन व्यवस्थाओं की पड़ताल करती है जिन्हें केवल तभी माना जा सकता था जब यरुशलेम में मंदिर खड़ा था।

- परिशिष्ट 8a: वे परमेश्वर की व्यवस्थाएँ जिन्हें मंदिर की आवश्यकता थी
- परिशिष्ट 8b: बलिदान — आज इन्हें मानना क्यों असम्भव है
- परिशिष्ट 8c: बाइबिल के पर्व — आज इनमें से कोई भी क्यों नहीं रखा जा सकता
- परिशिष्ट 8d: शुद्धिकरण की व्यवस्थाएँ — मंदिर के बिना इन्हें मानना क्यों असम्भव है
- परिशिष्ट 8e: दशमांश और पहिलौठे फल — आज इन्हें मानना क्यों असम्भव है
- परिशिष्ट 8f: परमप्रसाद सेवा — यीशु का अंतिम भोजन पास्का था
- परिशिष्ट 8g: नजीर और मन्नत की व्यवस्थाएँ — आज इन्हें मानना क्यों असम्भव है
- परिशिष्ट 8h: मंदिर से संबंधित आंशिक और प्रतीकात्मक आजाकारिता (यह पृष्ठ)
- परिशिष्ट 8i: क्रूस और मंदिर

आधुनिक धर्म में सबसे बड़े गलतफहमियों में से एक यह विचार है कि परमेश्वर उस आज्ञा के स्थान पर आंशिक आजाकारिता या प्रतीकात्मक आजाकारिता को स्वीकार कर लेता है जिसे उसने स्वयं दिया है। परन्तु परमेश्वर की व्यवस्था सटीक है। उसके नबियों और मसीह के द्वारा प्रगट किए गए उसके हर वचन, हर विवरण और हर सीमा पर उसकी सम्पूर्ण अधिकार-मंद्रा लगी है। न कुछ जोड़ा जा सकता है, न कछ घटाया जा सकता है (व्यवस्थाविवरण 4:2; 12:32)। जैसे ही कोई व्यक्ति यह निश्चय कर लेता है कि परमेश्वर की व्यवस्था के किसी भाग को बदला, नरम किया, बदलकर रखा या फिर से कल्पित किया जा सकता है, उसी क्षण वह अब परमेश्वर की नहीं, बल्कि अपनी ही बनाई हुई बात की आज्ञा मान रहा होता है।

## परमेश्वर की सटीकता और सच्ची आजाकारिता का स्वभाव

परमेश्वर ने कभी धृृधली आजाएँ नहीं दीं। उसने सटीक आजाएँ दीं। जब उसने **बलिदानों** की आजा दी, तो उसने पशुओं, याजकों, वेदी, आग, स्थान और समय के बारे में विवरण दिया। जब उसने **पर्वों** की आजा दी, तो उसने दिनों, भेटों, शुद्धता की आवश्यकताओं और आराधना के स्थान को निर्धारित किया। जब उसने **मनौतियों** की आजा दी, तो उसने बताया कि वे कैसे शरू होती हैं, कैसे चलती हैं और कैसे समाप्त होनी चाहिए। जब उसने **दशमांश और पहिलौठे फल** की आजा दी, तो उसने निर्धारित किया कि क्या लाया जाए, कहाँ लाया जाए और कौन उसे प्राप्त करे। इनमें से किसी भी बात को मनुष्य की रचनात्मकता या निजी व्याख्या पर नहीं छोड़ा गया।

यह सटीकता संयोग नहीं है। यह उसी के स्वभाव को प्रगट करती है जिसने व्यवस्था दी। परमेश्वर कभी लापरवाह नहीं, कभी अनुमानित नहीं, और न ही अव्यवस्थित “जुगड़” के लिए खुला है। वह वही आजाकारिता चाहता है जो उसने आजा दी है, न कि वह जो लोग चाहते हैं कि उसने दी होती।

इसलिए जब कोई व्यक्ति किसी व्यवस्था को केवल आंशिक रूप से मानता है—या आवश्यक कर्मों के स्थान पर प्रतीकात्मक कर्म रख देता है—तो वह अब परमेश्वर की आजा नहीं मान रहा होता। वह उस बदली हुई आजा को मान रहा होता है जिसे उसने स्वयं गढ़ लिया है।

## आंशिक आजाकारिता, आजाकारिता नहीं है

आंशिक आजाकारिता वह है जब कोई व्यक्ति किसी आजा के “आसान” या “सुविधाजनक” भागों को मानना चाहता है, पर उसके उन भागों को छोड़ देता है जो कठिन, महँगे या सीमित करने वाले लगते हैं। परन्तु व्यवस्था टुकड़ों में नहीं आती। चुन-चुन कर मानना उन भागों पर परमेश्वर के अधिकार करना है जिन्हें नज़रअन्दाज़ किया जा रहा है।

परमेश्वर ने इसाएल को बार-बार चेताया कि उसकी आजाओं का एक भी विवरण न मानना विद्रोह है (व्यवस्थाविवरण 27:26; यिर्मयाह 11:3-4)। यीशु ने भी यही सत्य पुष्टि की जब उन्होंने कहा कि जो कोई सबसे छोटी आजा को भी ढीला करेगा, वह स्वर्ग के राज्य में छोटा कहलाएगा (मत्ती 5:17-19)। मसीह ने कभी भी यह अनुमति नहीं दी कि कठिन भागों को छोड़कर केवल बाकी भागों को मान लिया जाए।

सबके लिए यह समझना आवश्यक है कि जो व्यवस्थाएँ मंदिर पर निर्भर हैं, वे कभी रद्द नहीं की गईं। परमेश्वर ने मंदिर को हटाया, व्यवस्था को नहीं। जब व्यवस्था को पूर्ण रूप से मानना असम्भव हो जाता है, तब “आंशिक आजाकारिता” कोई विकल्प नहीं है। उपासक को व्यवस्था का आदर करते हुए उसे बदलने से इंकार करना चाहिए।

## प्रतीकात्मक आजाकारिता मनुष्यों की बनाई आराधना है

प्रतीकात्मक आजाकारिता और भी खतरनाक है। यह तब होती है जब कोई व्यक्ति किसी असम्भव आजा के स्थान पर एक प्रतीकात्मक कर्म गढ़ता है, जिसके माध्यम से वह मूल व्यवस्था को “सम्मानित” करना चाहता है। परन्तु परमेश्वर ने प्रतीकात्मक विकल्पों की अनुमति नहीं दी। जब मंदिर खड़ा था, उसने इसाएल को यह नहीं कहा कि वे बलिदानों के स्थान पर केवल प्रार्थनाएँ कर लें, या पर्वों के स्थान पर केवल ध्यान-मनन कर लें। उसने प्रतीकात्मक नज़ीर की मनौती की इजाज़त नहीं दी। उसने प्रतीकात्मक दशमांश की अनुमति नहीं दी। उसने कभी यह नहीं कहा कि बाहरी आजाओं को उन सरल विधियों से बदला जा सकता है जिन्हें मनुष्य कहीं भी निभा सके।

प्रतीकात्मक आजाकारिता गढ़ना यह दिखाने जैसा है कि जैसे आजाकारिता की शारीरिक असम्भवता ने परमेश्वर को चौंका दिया हो—जैसे कि अब परमेश्वर को हमारी मदद की ज़रूरत हो कि हम वही “अभिनय” कर दें जिसे उसने स्वयं हटा

दिया है। पर यह परमेश्वर के लिए एक अपमान है। यह उसकी आज्ञाओं को लचीला दिखाता है, उसकी सटीकता को सौंदेबाज़ी योग्य बनाता है और उसकी इच्छा को ऐसी चीज़ बनाता है जिसे मनुष्य की रचनात्मकता द्वारा “पूरा” किया जाना हो।

प्रतीकात्मक आज्ञाकारिता वास्तव में आज्ञा-उल्लंघन है, क्योंकि यह उस आज्ञा को बदल देती है जो परमेश्वर ने बोली, ऐसे कार्य से जो उसने कभी नहीं कहा।

## जब आज्ञाकारिता असम्भव हो जाए, परमेश्वर विकल्प नहीं, संयम चाहता है

जब परमेश्वर ने मंदिर, वेदी और लेवीय सेवा को हटा दिया, तब उसने एक निर्णायक घोषणा की: कुछ व्यवस्थाएँ अब पूरी नहीं की जा सकतीं। लेकिन उसने उनके स्थान पर किसी भी चीज़ को अधिकृत नहीं किया।

ऐसी आज्ञा के प्रति सही प्रतिक्रिया, जिसे शारीरिक रूप से माना नहीं जा सकता, बहुत सरल है:

जब तक परमेश्वर स्वयं आज्ञाकारिता के साधन वापस न दे, तब तक आज्ञा मानने से रुके रहें।

यह अवज्ञा नहीं है। यह उन्होंने सीमाओं के प्रति आज्ञाकारिता है जिन्हें परमेश्वर ने स्वयं स्थापित किया है। यह प्रभु का भय है जो विनम्रता और संयम के रूप में प्रगट होता है।

किसी प्रतीकात्मक रूप में व्यवस्था का विकल्प बनाना विनम्रता नहीं है—यह भक्ति के वस्त्र में छिपी हुई बगावत है।

## “कर सकने योग्य संस्करण” का खतरा

आधुनिक धर्म अक्सर उन आज्ञाओं की “कर सकने योग्य किस्में” गढ़ने की कोशिश करता है जिन्हें परमेश्वर ने असम्भव बना दिया है:

- पास्का के बलिदान के स्थान पर गढ़ी गई एक सामृहिक “प्रभुभोज” सेवा
- उस दशमांश के स्थान पर बनाई गई 10% धनराशि की देन, जिसे परमेश्वर ने परिभाषित किया
- येरुशलेम में चढ़ाए जाने वाले पर्व-बलिदानों के स्थान पर “पर्वों की रिहर्सल”
- वास्तविक नज़ीर की मनौती के स्थान पर प्रतीकात्मक नज़ीर के अभ्यास
- बाइबिल की शुद्धता-प्रणाली के स्थान पर केवल “शुद्धता की शिक्षाएँ”

इन सभी अभ्यासों में एक ही ढाँचा दिखाई देता है:

1. परमेश्वर ने सटीक आज्ञा दी।
2. परमेश्वर ने मंदिर को हटाकर उस आज्ञा को मानना असम्भव बना दिया।
3. मनुष्यों ने उसका बदला हुआ रूप गढ़ा, जिसे वे स्वयं कर सकते हैं।
4. उन्होंने उसे “आज्ञाकारिता” कहना शुरू कर दिया।

परन्तु परमेश्वर अपनी आज्ञाओं के बदले विकल्पों को स्वीकार नहीं करता। वह केवल वही आज्ञाकारिता स्वीकार करता है जिसे उसने स्वयं परिभाषित किया है।

कोई विकल्प गढ़ना इस बात का संकेत है मानो परमेश्वर से भूल हो गई—मानो वह अपेक्षा करता रहा कि आजाकारिता जारी रहे, पर वह आजाकारिता के साधनों को बचाए रखने में असफल हो गया। यह मानव बुद्धि को इस तथाकथित “समस्या” का हल मानता है जिसे परमेश्वर ने देख ही नहीं पाया। यह परमेश्वर की बुद्धि का अपमान है।

## आज की आजाकारिता: व्यवस्था का सम्मान, बिना उसे बदले

आज भी सही मनोभाव वही है जो पूरी पवित्रशास्त्र में माँगा गया: वह सब मानों जिसे परमेश्वर ने सम्भव बनाया है, और जिसे उसने सम्भव नहीं रखा उसे बदलने से इनकार करें।

- हम वे आजाएँ मानते हैं जो मंदिर पर निर्भर नहीं हैं।
- हम उन आजाओं का आदर करते हैं जो मंदिर पर निर्भर हैं, उन्हें बदले बिना।
- हम आंशिक आजाकारिता को अस्वीकार करते हैं।
- हम प्रतीकात्मक आजाकारिता को अस्वीकार करते हैं।
- हम परमेश्वर का इतना भय मानते हैं कि केवल वही मानते हैं जो उसने आजा दिया, उसी प्रकार जैसा उसने आजा दी।

यही सच्चा विश्वास है। यही सच्ची आजाकारिता है। इसके अतिरिक्त और जो कुछ भी है, वह मनुष्यों का बनाया हुआ धर्म है।

## वह हृदय जो उसके वचन पर काँपता है

परमेश्वर उस उपासक से प्रसन्न होता है जो उसके वचन से काँपता है (यशायाह 66:2) — न कि उस से जो उसके वचन को सुविधाजनक या “कर सकने योग्य” बनाने के लिए नया रूप दे देता है। सच्चा विनम्र मनुष्य उन व्यवस्थाओं के स्थान पर नई आजाएँ नहीं गढ़ता जिन्हें परमेश्वर ने कुछ समय के लिए पहुँच से बाहर रखा है। वह पहचान लेता है कि आजाकारिता सदैव उसी आजा से मेल खानी चाहिए जिसे परमेश्वर ने वास्तव में बोला है।

परमेश्वर की व्यवस्था आज भी सिद्ध है। कुछ भी रद्द नहीं किया गया। परन्तु हर आजा आज मानने योग्य नहीं है। एक विश्वासयोग्य उत्तर यह है कि हम आंशिक आजाकारिता को स्वीकार न करें, प्रतीकात्मक आजाकारिता को अस्वीकार करें और व्यवस्था को ठीक वैसे ही सम्मान दें जैसे परमेश्वर ने उसे दिया।